हिन्दी साहित्य
प्रथम प्रश्न पत्र
जनपदीय भाषा–साहित्य (छत्तीसगढ़ी)
(पेपर कोड 0233)

प्रस्तावना–

हिन्दी केवल खड़ी बोली नही है, बल्कि एक बहुत बड़ा भाषिक समूह है । हिन्दी जगत में अनेक विभाषाएं बोलियां और उपबोलियां विद्यामान है जिनमें पुष्कल साहित्य सम्प्रदा है। इनके सम्सक अध्ययन और अन्वेषण की आवश्यकता है। जनपदीय भाषा छत्तीसगढ़ी निरन्तर विका की ओर अग्रसर हो रही है । अस्तु, इस भाषा और इसमें रचित साहित्य का इतिहास–विकास स्पष्ट करतक हुए इनसे संबंधित प्रमुख रचनाकारों का आलोचनात्क अनुशीलन करना हिन्दी के वृहत्तर हित में होगा । छत्तीसगढ़ी भाषा का पाठ्यक्रम निम्न बिन्दुओं पर आधारित है–

(क) छत्तीसगढ़ी भाषा का इतिहास – विकास।
(ख) छत्तीसगढ़ी भाषा में रचित साहित्य का इतिहास।
(ग) छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रमुख प्राचीन एवं अर्वाचीन रचनाओं की कृतियों का अध्ययन।

पाठ्य विषय–

रचनाएं–

(1) प्राचीन कवि संत धर्मदास के 3 पद
1. गुरू पइंया लागों नाम लखा दीजो हो ।
2. नैन आगे ख्याल घनेरा ।
3. भजन करौ भाई रे, अइसन तन पाय के ।
(सदर्भ– धर्मदास के शब्दावली से उदधृत)

(2) लखनलाल गुप्त का गद्य–
1. सेनपान
(गद्य– पुस्तक ''सोनपान'' के उद्धृत)

(3) अर्वाचीन रचनाकार
डॉ. सत्यभामा आडिल रचित गद्य
1. सीख सीख के गोठ
(गद्य– पुस्तक " गोठ " के उद्धृत)

(4) डॉ. विनय पाठक की कविताएं–
1. तंय उठथस सुरूज उथे
2. एक किसिम के नियाव
('' अकादसी और अनचिन्हार'' पुस्तक से उद्धृत)

प्राचार्य
शासकीय दानवीर बुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला – दुर्ग (छ.ग.)

(5) **मुकुन्द कौशल– छत्तीसगढ़ गजल**

" छै बित्ता के मनखे देखों ..... से –मछरी मन लाख लेथे" तक
(पुस्तक " छत्तीसगढ़ गजल" के पृष्ट 17 से उद्धृत)

द्रुतपाठ के रचनाकार – (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

1. सुन्दर लाल शर्मा
2. कविलनाथ कश्यप
3. रामचन्द्र देशमुख (रंगकर्मी)

अंक विभाजन

3 व्याख्याएं	–	21 अंक
2 आलोचनात्मक प्रश्न	–	24 अंक
5 लघुत्तरी प्रश्न	–	15 अंक
15 वस्तुनिष्ठ/अति लघुत्तरी प्रश्न	–	15 अंक
कुल	–	**75 अंक**

इकाई विभाजन

इकाई एक	–	व्याख्या
इकाई दो	–	प्राचीन एवं अर्वाचीन रचनाकार
इकाई तीन	–	(अ) छत्तीसगढ़ भाषा का इतिहास (ब) छत्तीसगढ़ साहित्य का इतिहास
इकाई चार	–	द्रुतपाठ के तीन रचनाकार
इकाई पांच	–	वस्तुनिष्ट/ अतिलघूत्तरीय प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला - दुर्ग (छ.ग.)

एम.ए. – (हिन्दी) – 2017–18
चतुर्थ सेमेस्टर
प्रश्न पत्र – अष्टम
जनपदीय भाषा और साहित्य (छत्तीसगढ़ी)

पूर्णांक : 80

पाठ्य विषय :–

इकाई–1 छत्तीसगढ़ी भाषा–भौगोलिक सीमा, नामकरण, भाषिक स्वरूप एवं व्याकरणिक विशेषताएँ।

इकाई–2 छत्तीसगढ़ी साहित्य की युग प्रवृत्तियॉ एवं इतिहास ।

इकाई–3 छत्तीसगढ़ी कविता एवं कवि –
(1) सुंदरलाल शर्मा
(2) मुकुटधर पाण्डेय
(3) हरि ठाकुर
(4) डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा

इकाई–4 छत्तीसगढ़ी नाटक एवं उपन्यास
1. करमछड़हा (नाटक) – डॉ. खूबचंद बघेल
2. आवा (उपन्यास) – परदेशीराम वर्मा

इकाई–5 द्रुतपाठ हेतु निम्नलिखित रचनाकार का अध्ययन (पांच लघुत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे)
(1) लखन लाल गुप्त (2) लक्ष्मण मस्तुरिहा
(3) केयूर भूषण (4) मुकुन्द कौशल
(5) लोचन प्रसाद पाण्डेय (6) लाला जगदलपुरी
(7) पवन दीवान (8) कोदूराम दलित

इकाई–6 संपूर्ण पाठ्यक्रम से दस वस्तुनिष्ठ अतिलघुत्तरीय प्रश्न ।

अंक विभाजन

इकाई 1 –	1X 15	=	15 अंक
इकाई 2 –	1X 15	=	15 अंक
इकाई 3 –	1X 15	=	15 अंक
इकाई 4 –	1X 15	=	15 अंक
इकाई 5 –	5X 2	=	10 अंक
इकाई 6 –	10X 1	=	10 अंक
	योग	=	**80 अंक**
	आंतरिक मूल्यांकन		**20 अंक**

निर्धारित पुस्तकें:–

1. छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्विकास – डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा
2. छत्तीसगढ़ी, हलबी, भतरी भाषाओं का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन – भालचंद्र राव तैलंग
3. छत्तीसगढ़ी परिचय– डॉ. बलदेव मिश्र
4. छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन – दयाशंकर शुक्ल
5. छत्तीसगढ़ी लोकजीवन और लोकसाहित्य का अध्ययन – डॉ. शकुन्तला वर्मा
6. छत्तीसगढ़ी भाषा का शास्त्रीय अध्ययन– डॉ. शंकर शेष
7. प्राचीन छत्तीसगढ़ी बोली – प्यारेलाल गुप्त
8. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य और भाशा – डॉ. बिहारीलाल साहू
9. छत्तीसगढ़ी भाशा और साहित्य – डॉ. सत्यभामा आडिल
10. छत्तीसगढ़ के साहित्यकार – देवीप्रसाद वर्मा
11. मानक छत्तीसगढ़ी व्याकरण – चंद्रकुमार चंद्राकर

प्राचार्य
सकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला - दुर्ग (छ.ग.)

एम.ए. – (हिन्दी साहित्य) 2019–20
तृतीय सेमेस्टर
प्रश्न पत्र – चतुर्थ
भारतीय साहित्य

पूर्णांक : 80

पाठ्य विषय :–

इकाई–1 भारतीय साहित्य का स्वरूप, भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ, भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब, हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति ।

इकाई–2 हिन्दीतर साहित्य का इतिहास जो तीन वर्गों में विभक्त है –

1. दक्षिणात्य भाषा वर्ग से मलयालम
2. पूर्वांचल भाषा वर्ग में बँगला
3. पश्चिमोत्तर भाषा वर्ग में मराठी

प्रत्येक विद्यार्थी इन तीनों विकल्पों में से एक भाषा चयन करेंगे बशर्ते वह भाषा अपनी क्षेत्रीय भाषा से भिन्न भाषा वाले वर्ग से संबंधित हो। विद्यार्थी एक भाषा वर्ग (मलयालम, बंगला, मराठी) में से किसी एक के इतिहास एवं हिन्दी भाषा साहित्य से उस भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

इकाई–3 उपन्यास – अग्निगर्भ (बंगला– महाश्वेता देवी)

इकाई– 4 नाटक – हयवदन (कन्नड़–गिरीशकर्नाड)

कविता संग्रह – कोच्चि के दरख्त (मलयालम– के.जी. शंकर पिल्लै)

इकाई तीन तथा चार के अंतर्गत केवल आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे ।

अंक विभाजन

प्रश्न 1 –	1X 15	=	15 अंक
प्रश्न 2 –	1X 15	=	15 अंक
प्रश्न 3 –	1X 15	=	15 अंक
प्रश्न 4 –	1X 15	=	15 अंक
प्रश्न 5 –	5X 2	=	10 अंक
प्रश्न 6 –	10X 1	=	10 अंक
	योग	**=**	**80 अंक**
	आंतरिक मूल्यांकन		**20 अंक**

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला - दुर्ग (छ.ग.)

परिचर्चा

दिनाँक
9.03.2019

महाविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर तथा स्नातक हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के लिए आज दिनांक 9.03.2019 को अपराह्न 1.00 बजे से 'आधुनिक भारतीय साहित्य का स्वरूप' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया है। जिसमें गुजराती, पंजाबी, बांग्ला, उर्दू, कन्नड़ एवं संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्य पर क्रमशः वरिष्ठ साहित्यकार श्री मुकुन्द कौशल, श्री गुलबीर सिंह भाटिया, श्रीमती मीना दास, मो० जाकिर एवं प्रो० जी० ए० पनश्याम विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० महेशचंद्र शर्मा कर रहे हैं।

विषय विशेषज्ञ - श्री मुकुन्द कौशल मुकुंद कौशल
(वरिष्ठ साहित्यकार)

श्री गुलबीर सिंह भाटिया
(वरिष्ठ कथाकार)

श्रीमती मीना दास
(वरिष्ठ कवयित्री एवं अनुवादिका)

मो० जाकिर
(वरिष्ठ पत्रकार)

09/3/2019
प्रो० जी० ए० पनश्याम
(प्राध्यापक)

अध्यक्ष - डॉ० महेशचंद्र शर्मा
प्राचार्य

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला - दुर्ग (छ.ग.)

प्रतिभागियों के नाम

क्र०	नाम	पद / कक्षा	हस्ताक्षर
1.	डा. ए. ए. खान	प्राध्यापक	[illegible]
2.	डॉ ए. के मिश्रा	प्राध्यापक	[illegible]
3.	डॉ. शुभा शर्मा	सह. प्राध्यापक	Sharma
4.	डॉ० रीता गुप्ता	सह० प्राध्यापक	9/3/2019
5.	डॉ० श्रीमती अनुसुईया जोगी	—"—	A Jogi 09-03-19
6.	डॉ० विद्या पंचांगम	—"—	V. Panchag 09/03/19
7.	श्रीमती अर्चना पांडेय	—"—	9/3/19
8.	डॉ श्रीमती गिरिजा पटेल		G patel 9-3-19
9.			
10.	दुलेश्वरी देशमुख	M.A. IV sem. Hindi	Duleshwari
11.	मुस्कान साहू	एम.ए. द्वितीय सेम.	Muskan Sahu
12.	आरती साहू	M.A. IV sem. Hindi	Aarti
13.	ज्योति	M.A. II sem Hindi	Jyoti
14.	ख्याति	M.A. II Sem. Hindi	Khyati
15.	रुक्मणी साहू	=//=	Rukhmani Sahu
16.	टुलेश्वरी	M.A II sem Hindi	Tuleshwari
17.	तारिणी	M. A. II Sem Hindi	Tarinee
18.	गायत्री	M.A II Sem. Hindi	Gayatri
19.	टीकम सिंह	एम. ए. II सेमेस्टर	[illegible]
20.	अभिषेक सिंह	एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर	[illegible]
21.	मीनाक्षी साहू	एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर	Minakshi
22.	संध्या	M.A IV Sem. Hindi	Sandhya
23.	संतोषी साहू	MA IV Sem. Hindi	SantoshiSahu
24.			
25.			
26.			
27.			
28.			
29.			

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला - दुर्ग (छ.ग.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई

जिला–दुर्ग (छ.ग.) 491107

Accredited with Grade 'B' by NAAC, Bangalore

Phone & Fax No. : 0788 – 2673756 e-mail : gdtcollege@gmail.com, www.gdt-college.com

उतई, दिनांक : 19.08.2019

–: सूचना :–

महाविद्यालय के समस्त अधिकारी/कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं को सूचित किया जाता है कि शासन के निर्देशानुसार 20 अगस्त 2019 को 'सद्भावना दिवस' के अवसर पर पूर्वान्ह 11:00 बजे सद्भावना की शपथ दिलाई जायेगी।

अतः उक्त तिथि एवं समय पर प्राचार्य कक्ष के सामने उपस्थित होवें।

लेo डॉ. अनुसूईया जोगी,
एन.सी.सी. अधिकारी

प्रो. राकेश मिंज,
एन.एस.एस. अधिकारी

डॉ. महेशचन्द्र शर्मा
प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय
उतई (दुर्ग–छ.ग.) 491107

19/8/19

19.08.19

19/08/19

19.8.19

h:\utai college-2019\suchna\suchna-2019-20.doc20

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला – दुर्ग (छ.ग.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई

जिला–दुर्ग (छ.ग.) 491107

Accredited with Grade 'B' by NAAC, Bangalore

Phone & Fax No. : 0788 – 2673756 e-mail : gdtcollege@gmail.com, www.gdt-college.com

क्रं. 112 /स्था./2019 उतई, दिनांक : 28/05/19

प्रति,

कुलसचिव,
हेमचन्द यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग
दुर्ग, छत्तीसगढ़

विषय :– महाविद्यालय में 'आतंकवाद विरोधी दिवस' के आयोजन विषयक जानकारी।

संदर्भ :– आपका पत्र क्रं. 1285/अका./2019 दुर्ग, दिनांक 20.05.2019

––00––

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि संदर्भित पत्र के परिपालन में महाविद्यालय में दिनांक 21.05.2019 को 'आतंकवाद विरोधी दिवस' का आयोजन किया। तत्संबंधी प्रतिवेदन एवं फोटोग्राफ्स अवलोकनार्थ संलग्न कर आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है।

संलग्न :– उपरोक्तानुसार पृष्ठ - 03

प्रो. राकेश मिंज
कार्यक्रम अधिकारी रा.से.यो.

डॉ. महेशचन्द्र शर्मा
प्राचार्य
शास. दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महावि.
उतई, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

पृ.क्रं. 113 /स्था./2019 उतई दिनांक 28/05/19

प्रतिलिपि :–

1. अवर सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग, छत्तीसगढ़ शासन, मंत्रालय महानदी भवन, अटल नगर, रायपुर को उनके पत्र क्रमांक एफ–10–02/2019/1–5, अटल नगर, दिनांक 10.05.2019 के संदर्भ में सूचनार्थ प्रेषित।

डॉ. महेशचन्द्र शर्मा
प्राचार्य
शास. दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महावि.
उतई, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

01

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला – दुर्ग (छ.ग.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई

जिला–दुर्ग (छ.ग.) 491107

Accredited with Grade 'B' by NAAC, Bangalore

Phone & Fax No. : 0788 – 2673756 e-mail : gdtcollege@gmail.com, www.gdt-college.com

उतई, दिनांक : 21.05.2019

आतंकवाद विरोधी दिवस
प्रतिवेदन

शासन के निर्देशानुसार शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई में दिनांक 21.05.2019 को 'आतंकवाद विरोधी दिवस' पर 'आतंकवाद और हिंसा के खतरे' विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आतंकवाद के मूल में घृणा, असंतोष और प्रतिशोध का भाव है। भारतीय संस्कृति में निहित 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् पूरी दुनिया ही मेरा परिवार है, की भावना विश्व से आतंकवाद को दूर करने में हमारी बड़ी सहायक सिद्ध हो सकती है। आतंकवाद को दूर करने के लिए हमें हर प्रकार की हिंसा पर लगाम लगानी होगी और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की उदारता को आत्मसात् करना होगा। इस कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। एम.ए. हिन्दी चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा कु. दुलेश्वरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद आज भारत के समक्ष सबसे बड़ा खतरा हैं विश्व का समस्त शक्तियों को एकताबद्ध होकर इसे दूर करने का प्रयास करना चाहिये। एम.ए. हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर के छात्र कमल नारायण ने कहा कि आतंकवाद ने आज पूरे विश्व को जकड़ लिया है जो बहुत चिन्तनीय विषय है। इस मौके पर अंग्रेजी विषय के विभागाध्यक्ष प्रो. अब्दुल अलीम खान तथा हिन्दी विषय के विभागाध्यक्ष प्रो. सियाराम शर्मा ने महत्त्वपूर्ण विचार रखे। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी प्रो. राकेश मिंज ने किया। कार्यक्रम के अन्त में छात्र–छात्राओं, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को प्राचार्य द्वारा आतंकवाद के विरुद्ध शपथ दिलाई गई। इस कार्यक्रम में समस्त महाविद्यालयीन परिवार की सहभागिता रही।

प्रो. राकेश मिंज
कार्यक्रम अधिकारी रा.से.यो.

डॉ. महेशचन्द्र शर्मा
प्राचार्य
शास. दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महावि.
उतई, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला – दुर्ग (छ.ग.)

आतंक नहीं, हम भारतीय आपसी सद्भाव के पक्षधर

उतई. आतंकवाद की कोई जाति, धर्म और मजहब नहीं है. किसी भी धर्म में धर्म के नाम पर हिंसा को बढ़ावा देने की सीख नहीं दी जाती. धार्मिक अज्ञानता के कारण धर्म, नाम पर लोग आतंक को बढ़ावा देते हैं. हमारे देश में अहिंसा को परम धर्म कहा गया है. सत्य को धर्म माना गया है. धर्म हमारी भौतिक और नैतिक उन्नति में सहायक होता है. धीरज, क्षमा, इच्छाओं का दमन, ज्यादा संग्रह न करने की प्रवृत्ति, पवित्रता, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, सत्य और अक्रोध ये धर्म के महत्त्वपूर्ण लक्षण हैं. धर्म के इन लक्षणों को जो धारणा करता है वह कभी आतंकवाद का प्रेरक या समर्थक नहीं हो सकता. आतंकवाद के मूल में घृणा, असंतोष और प्रतिशोध का भाव है. आतंकवाद को दूर करने के लिए हमें हर प्रकार हिंसा पर लगाम लगानी होगी और सर्वे भवन्तु सुखिनः की उदारता को आत्मसात करना होगा. उक्त विचार शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई के प्राचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने शासन के निर्देशानुसार आतंकवाद विरोधी दिवस पर महाविद्यालय में आयोजित आतंकवाद और हिंसा के खतरे विषयक गोष्ठी में शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते

अपने विचार व्यक्त करते हुए छात्रा एमए हिन्दी की छात्रा दुलेश्वरी.

हुए व्यक्त किये. विचारगोष्ठी के उपरान्त उपस्थित छात्र-छात्राओं, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को प्राचार्य डॉ. शर्मा द्वारा आतंकवाद के विरुद्ध शपथ दिलायी गयी. उन्होंने कहा कि हम शपथ लेते हैं कि सभी प्रकार के आतंकवाद का डटकर विरोध करेंगे. उन्होंने कहा कि हम अपने देश की अहिंसा एवं सहनशीलता की परम्परा में दृढ़ विश्वास रखते है. हम शान्ति सद्भाव और समझ से काम लें. इस अवसर पर अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. अब्दुल अलीम खान ने कहा कि आतंकवादी की मनोदशा परपीड़क की होती है. वे मानसिक रोगी होते हैं और उन्हें प्रायः धर्म के नाम पर गुमराह किया जाता है. इस अवसर पर डॉ. सियाराम शर्मा ने कहा कि आतंकवादी हिंसा को सिर्फ हिंसा के बल पर समाप्त नहीं किया जा सकता. आतंकवाद के पीछे निहित कारणों को भी समझने का प्रयास किया जाना चाहिए. उन्हें समझाने का भी प्रयास करना चाहिये. स्नातकोत्तर हिन्दी की छात्रा दुलेश्वरी ने इस विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद आज भारत के समक्ष सबसे बड़ा खतरा है. विश्व की समस्त शक्तियों को एकताबद्ध होकर इसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए. स्नातकोत्तर हिन्दी के छात्र कमलनारायण ने कहा कि आतंकवाद ने आज पूरे विश्व को जकड़ रखा है. जीवन मूल्यों को खतरा पहुंचाने वाली और विघटनकारी शक्तियों से लड़ने की भी शपथ लेते है. संचालन और धन्यवाद ज्ञापन राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी राकेश मिंज ने किया.

नवभारत 2 — रायपुर, गुरुवार 23 मई 2019

हम भारतीय आतंक नहीं, आपसी सद्भाव के हैं पक्षधर

हरिभूमि न्यूज ▸▸ उतई

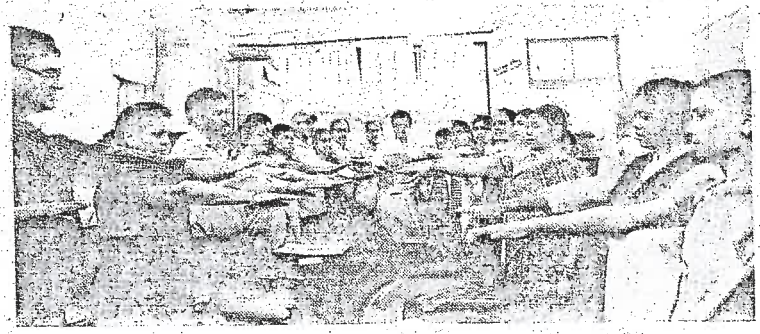

आतंकवाद की कोई जाति, धर्म और मजहब नहीं है। किसी भी धर्म में धर्म के नाम पर हिंसा को बढ़ावा देने की सीख नहीं दी जाती। धार्मिक अज्ञानता के कारण धर्म, नाम पर लोग आतंक को बढ़ावा देते हैं। हमारे देश में अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। सत्य को धर्म माना गया है। धर्म हमारी भौतिक और नैतिक उन्नति में सहायक होता है। धीरज, क्षमा, इच्छाओं का दमन, ज्यादा संग्रह न करने की प्रवृत्ति, पवित्रता, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, सत्य और अक्रोध ये धर्म के महत्त्वपूर्ण लक्षण हैं। धर्म के इन लक्षणों को जो धारणा करता है वह कभी आतंकवाद का प्रेरक या समर्थक नहीं हो सकता। आतंकवाद के मूल में घृणा, असंतोष और प्रतिशोध का भाव है। भारतीय संस्कृति ... आतंकवाद को दूर करने में बड़ी सहायक हो सकती है। आतंकवाद को दूर करने के लिए हमें हर प्रकार हिंसा पर लगाम लगानी होगी। उक्त विचार शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय उतई के प्राचार्य डॉ. महेशचन्द्र ... ने आतंकवाद विरोधी दिवस पर कालेज ... आतंकवाद और हिंसा के खतरे विषयक गोष्ठी में व्यक्त किये। डॉ. शर्मा ने आतंकवाद के विरुद्ध शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि हम शान्ति सद्भाव और समझ से काम लें। इस अवसर पर अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. अब्दुल अलीम खान ने कहा कि आतंकवादी की मनोदशा परपीड़क की होती है। वे मानसिक रोगी होते हैं और उन्हें प्रायः धर्म के नाम पर गुमराह किया जाता है। इस अवसर पर डॉ. सियाराम शर्मा ने कहा कि आतंकवादी हिंसा को सिर्फ हिंसा के बल पर समाप्त नहीं किया जा सकता। आतंकवाद के पीछे निहित कारणों को भी समझने का प्रयास किया जाना चाहिए। उन्हें समझाने का भी प्रयास करना चाहिये। छात्रा दुलेश्वरी ने कहा कि पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद आज भारत के समक्ष सबसे बड़ा खतरा है। विश्व की समस्त शक्तियों को एकताबद्ध होकर इसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। छात्र कमलनारायण ने कहा कि आतंकवाद ने आज पूरे विश्व को जकड़ रखा है और इसकी जड़ें गहरे तक फैल गयी हैं। जीवन मूल्यों को खतरा पहुँचाने वाली और विघटनकारी शक्तियों से लड़ने की भी शपथ लेते है। कार्यक्रम का सफल संचालन और धन्यवाद ज्ञापन राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी श्री राकेश मिंज ने किया

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला - दुर्ग (छ.ग.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई

जिला–दुर्ग (छ.ग.) 491107

Accredited with Grade 'B' by NAAC, Bangalore

Phone & Fax No. : 0788 – 2673756 e-mail : gdtcollege@gmail.com, www.gdt-college.com

उतई, दिनांक : 20.05.2019

–: सूचना :–

महाविद्यालय के समस्त अधिकारी/कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं को सूचित किया जाता है कि शासन के निर्देशानुसार दिनांक 21 मई 2019 को ***"आतंकवाद विरोधी दिवस"*** के रूप में मनाया जाना है। इस बाबत् उक्त दिनांक को 11:00 बजे आतंकवाद विरोधी शपथ दिलाया जाना है तथा **"आतंकवाद और हिंसा के खतरे"** विषय पर परिचर्चा का आयोजन कक्ष क्रमांक–06 में किया जा रहा है।

अतः उक्त दिनांक व समय में सभी की उपस्थिति अपेक्षित है।

प्रो. राकेश मिंज
कार्यक्रम अधिकारी रा.से.यो.

डॉ. महेशचन्द्र शर्मा
प्राचार्य
शास. दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महावि.
उतई, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला – दुर्ग (छ.ग.)

शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई, जिला–दुर्ग

अधिकारी/कर्मचारियों की सूची

दिनांक : ....

क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ताक्षर
1	डॉ. महेशचन्द्र शर्मा	प्राचार्य	
2	डॉ.ए.के.मिश्रा	प्राध्यापक (गणित)	
3	डॉ.ए.ए.खान	प्राध्यापक (अंग्रेजी)	
4	डॉ. श्रीमती मधुलिका रॉय	सहा.प्रा. (प्राणीशास्त्र)	
5	डॉ. श्रीमती शुभा शर्मा	सहा.प्रा. (अर्थशास्त्र)	
6	डॉ. श्रीमती पी.वसंतकला	सहा.प्रा. (अंग्रेजी)	
7	डॉ.ए.के. श्रीवास्तव	सहा.प्रा. (वनस्पति)	
8	डॉ. सियाराम शर्मा	सहा.प्रा. (हिन्दी)	
9	श्रीमती अर्चना पाण्डेय	सहा.प्रा. (समाज शा.)	
10	डॉ.श्रीमती विद्या पंचागम	सहा.प्रा. (समाज शा.)	
11	डॉ.श्रीमती राजबाला गुरू	सहा.प्रा. (राज. वि.)	
12	डॉ.श्रीमती रीता गुप्ता	सहा.प्रा. (हिन्दी)	
13	डॉ. श्रीमती अनुसूईया जोगी	सहा.प्रा. (इतिहास)	
14	डॉ.पंकज सोनी	सहा.प्रा. (रसायन)	
15	श्री.राकेश मिंज	सहा.प्रा. (वाणिज्य)	
16	श्री संदीप कुमार सोनी	सहा.प्रा. (भौतिक शास्त्र)	
	ग्रंथपाल		
1	श्री अब्दुल हबीब कुरैशी		
	क्रीड़ाधिकारी		
1	रिक्त पद		
	शैक्षणिक कर्मचारी (प्रयोगशाला तकनीशियन)		
1	श्री व्ही.जे.राय		
2	श्री आर.सी.भतपहरी		
3	श्री व्ही.के.आर्य		
4	श्री पीयूष कुमार शार्वा		

क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ताक्षर
1	रिक्त पद	सहा0ग्रेड–2	
2	श्रीमती गिरिजा सोनी	सहा0ग्रेड–3	
3	कु.नगीना रावटे	प्रयो. परि.	
4	श्री हिमांशु कौशिक	प्रयो. परि.	
5	श्री शोभाराम कुर्रे	भृत्य	
6	श्रीमती सरोजनी यादव	भृत्य	
7	श्री राधेश्याम ध्रुव	बुक लिफ्टर	
8	रिक्त पद	चौकीदार	
9	श्री एन.मालकोन्डैया	स्वीपर	
	दाऊ उत्तम साव शासकीय महाविद्यालय मचान्दुर दुर्ग		
1	डॉ. जी. ए. घनश्याम	प्राध्यापक (अंग्रेजी)	
2	डॉ. श्रीमती गिरिजा पटेला	सहा.प्राध्या. (रसायन शा)	
3	श्री नीलम संजीव एक्का	सहा.प्राध्या. (समाजशास्त्र)	
4	श्री एन.पी.वर्मा	सहा0ग्रेड–1	

① दुलेश्वरी – M.A. Final

② कमल नारायण – M.A. Pre.

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई

जिला–दुर्ग (छ.ग.) 491107

Accredited with Grade 'B' by NAAC, Bangalore

Phone & Fax No. : 0788 – 2673756 e-mail : gdtcollege@gmail.com, www.gdt-college.com

उतई, दिनांक : 16.11.2018

–: सूचना :–

समस्त स्टाफ एवं विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि शासन के निर्देशानुसार महाविद्यालय में दिनांक 19.11.2018 से 25.11.2018 तक ***'कौमी एकता सप्ताह'*** आयोजित है। राज्य में विधानसभा निर्वाचन के सन्दर्भ में आदर्श आचार संहिता का पालन करते हुये सह–शैक्षणिक कार्यक्रम राष्ट्रीय एकीकरण पर केन्द्रित रहेंगे।

"अनेकता में एकता" विषय पर केन्द्रित भाषण, गीत, नारालेखन एवं निबन्ध लेखन प्रतिस्पर्धाओं में सहभागिता के इच्छुक विद्यार्थियों द्वारा डॉ. सियाराम शर्मा (सहा. प्राध्या. हिन्दी) को अपने नाम लिखाया जाना है।

दिनांक 24.11.2018 को अपराह्न 02:00 बजे कक्ष क्रं.–6 में उक्त विषय पर केन्द्रित व्याख्यान माला प्राचार्य की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी। सबकी उपस्थिति अपेक्षित है।

इस प्रसंग में 'कौमी एकता' की शपथ भी दिलाई जायेगी।

डॉ. सियाराम शर्मा
संयोजक
साहित्यिक–सांस्कृतिक परिषद्

डॉ. महेशचन्द्र शर्मा
प्राचार्य
शास. दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महावि.
उतई, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला – दुर्ग (छ.ग.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई

जिला–दुर्ग (छ.ग.) 491107

Accredited with Grade 'B' by NAAC, Bangalore

Phone & Fax No. : 0788 – 2673756 e-mail : gdtcollege@gmail.com, www.gdt-college.com

उतई, दिनांक : 30.10.2019.

राष्ट्रीय एकता, सतर्कता जागरूकता सप्ताह एवं कौमी एकता दिवस

–: सूचना :–

महाविद्यालय के समस्त छात्र–छात्राओं, एन. सी. सी. एवं एन. एस. एस. के स्वयं सेवकों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि स्वतन्त्र भारत के प्रथम गृहमन्त्री, लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती एवं पूर्व प्रधानमन्त्री, लौह महिला श्रीमती इन्दिरा गाँधी के शहादत दिवस के अवसर पर दिनांक 31.10.2019 को राष्ट्रीय एकता दिवस, सतर्कता जागरूकता सप्ताह एवं कौमी एकता दिवस का आयोजन कक्ष क्रं. 06 में अपराह्न 12.30 बजे से किया जायेगा, जिसमें आप सब की उपस्थिति अपेक्षित है।

इस अवसर पर उक्त दोनों महान् व्यक्तित्वों के जीवन एवं कर्म पर चर्चा की जायेगी तथा राष्ट्रीय एकता, सतर्कता जागरूकता एवं कौमी एकता की शपथ दिलायी जायेगी। परिचर्चा के उपरांत एकता दौड़ का आयोजन किया जायेगा।

प्रभारी
डॉ. श्रीमती रीता गुप्ता 30/10/19
डॉ. श्रीमती अनुसूईया जोगी 30-10-19
प्रो. राकेश मिंज

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम
स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई, दुर्ग

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला – दुर्ग (छ.ग.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई

जिला–दुर्ग (छ.ग.) 491107

Accredited with Grade 'B' by NAAC, Bangalore

Phone & Fax No. : 0788 – 2673756 e-mail : gdtcollege@gmail.com, www.gdt-college.com

उतई, दिनांक : 30.10.2018

–: सूचना :–

महाविद्यालय के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं को सूचित किया जाता है कि शासन के निर्देशानुसार दिनांक 31.10.2018 को *'राष्ट्रीय एकता दिवस/कौमी एकता दिवस'* का आयोजन किया जाना हैं। इस बाबत् शपथ भी लिया जाना है।

अतः कक्ष क्रमांक–22 में समय 2:00 बजे सभी अनिवार्य रूप से उपस्थित होवें।

डॉ. महेशचन्द्र शर्मा
प्राचार्य
शास. दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महावि.
उतई, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

संयोजक

डॉ. श्रीमती रीता गुप्ता

डॉ. श्रीमती अनुसूईया जोगी
(एन.सी.सी. प्रभारी)

प्रो. राकेश मिंज
(एन.एस.एस. प्रभारी)

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई, जिला – दुर्ग (छ.ग.)

शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई, जिला–दुर्ग

अधिकारी / कर्मचारियों की सूची

दिनांक : .....

क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ताक्षर	क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ताक्षर
1	डॉ. महेशचन्द्र शर्मा	प्राचार्य		1	श्री एन.पी.वर्मा	सहा0ग्रेड–2	
2	डॉ.ए.के.मिश्रा	प्राध्यापक (गणित)		2	श्रीमती गिरिजा सोनी	सहा0ग्रेड–3	
3	डॉ.ए.ए.खान	प्राध्यापक (अंग्रेजी)		3	कु.नगीना रावटे	प्रयो. परि.	31.10.18
4	डॉ. श्रीमती मधुलिका रॉय	सहा.प्रा. (प्राणीशास्त्र)	31.10.18	4	श्री हिमांशु कौशिक	प्रयो. परि.	
5	डॉ. श्रीमती शुभा शर्मा	सहा.प्रा. (अर्थशास्त्र)	31.10.18	5	श्री शोभाराम कुर्रे	भृत्य	
6	डॉ. श्रीमती पी.वसंतकला	सहा.प्रा. (अंग्रेजी)	31.10.18	6	श्रीमती सरोजनी यादव	भृत्य	
7	डॉ.ए.के. श्रीवास्तव	सहा.प्रा. (वनस्पति)		7	श्री राधेश्याम ध्रुव	बुक लिफ्टर	
8	डॉ. सियाराम शर्मा	सहा.प्रा. (हिन्दी)		8	रिक्त पद	चौकीदार	
9	श्रीमती अर्चना पाण्डेय	सहा.प्रा. (समाज शा.)		9	श्री एन.मालकोन्डैया	स्वीपर	
10	डॉ.श्रीमती विद्या पंचागम	सहा.प्रा. (समाज शा.)	31.10.18				
11	डॉ.श्रीमती राजबाला गुरू	सहा.प्रा. (राज. वि.)	31.10.18		**अतिथि व्याख्याता**		
12	डॉ.श्रीमती रीता गुप्ता	सहा.प्रा. (हिन्दी)		1.	सुश्री प्रतिभा यादव	(राजनीति विज्ञान)	31.10.2018
13	ले0 डॉ. श्रीमती अनुसूईया जोगी	सहा.प्रा. (इतिहास)					
14	डॉ.पंकज सोनी	सहा.प्रा. (रसायन)					
15	श्री.राकेश मिंज	सहा.प्रा. (वाणिज्य)			**जनभागीदारी कर्मचारी**		
16	श्री संदीप कुमार सोनी	सहा.प्रा. (भौतिक शास्त्र)		1	सुश्री तृषा भिवगड़े	(बायोटेक.)	31/10/18
	ग्रंथपाल			2	सुश्री सोनिया सिन्हा	(कम्प्यू.साइंस)	31.10.18
1	श्री अब्दुल हबीब कुरैशी		31/10/2018	3	श्री ज्ञानेश्वर प्रसाद	(हिन्दी)	
	क्रीड़ाधिकारी			4	सुश्री अभिलाषा	(हिन्दी)	31/10/18
1	रिक्त पद			5	सुश्री कल्याणी मिर्झा	(समाजशास्त्र)	
				6	सुश्री भबीता मण्डावी	(वनस्पति शास्त्र)	31/10/18
	शैक्षणिक कर्मचारी (प्रयोगशाला तकनीशियन)			7	सुश्री स्नेहा श्रीपर्णा सतपथी	(माइक्रो.)	
1	श्री व्ही.जे.राय			8	श्री राकेश कुमार साहू	(वनस्पति शास्त्र)	
2	श्री आर.सी.भतपहरी						
3	श्री व्ही.के.आर्य						
4	श्री पीयूष कुमार शार्वा						

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई

जिला–दुर्ग (छ.ग.) 491107

Accredited with Grade 'B' by NAAC, Bangalore

Phone & Fax No. : 0788 – 2673756 e-mail : gdtcollege@gmail.com, www.gdt-college.com

सूचना

दिनांक–20–08–2018

महाविद्यायल के समस्त छात्र–छात्राओं, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को सूचित किया जाता हैं कि आज 20 अगस्त को पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी का जन्म दिवस है। इस उपलक्ष्य में आज अपराह्न 02;00 बजे महाविद्यायल प्रांगण में सद्भावना दिवस का कार्यक्रम आयोजित है,जिसमें प्राचार्य महोदय द्वारा सद्भावना की प्रतिज्ञा दिलायी जायेगी। इसमें आप सभी की उपस्थिति अपेक्षित है ।

संयोजक
सियाराम शर्मा

प्रचार्य
डॉ.महेशचन्द्र शर्मा
शा.दा.तु.स्नातको.महावि.उतई

शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई जिला दुर्ग (छ.ग.)

'राम के चरित्र और व्यक्तित्व ने भारत की विविध भाषाओं के साथ अनेक देशों के साहित्य को प्रभावित किया'–डॉ. महेशचन्द्र शर्मा

उतई महाविद्यालय में 'विश्व फलक पर रामायण' पर सार्थक परिचर्चा

उतई/"रामायण का शाब्दिक अर्थ है 'राम का मार्ग'। राम मर्यादा पुरूषोत्तम थे। उनके चरित्र और व्यक्तित्व ने भारत की समस्त भाषाओं एवं विश्व के अनेक देशों के साहित्य को प्रभावित किया। अपनी सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप इन बहुसंख्यक रामायणों की कथा में काफी विविधता है। 'राम' का उल्लेख वेदों में भी मिलता है। भारत और पूरे विश्व में 'इन्हें' लोकप्रिय बनाने का श्रेय महर्षि वाल्मीकि को जाता है। रामायण में चौबीस हजार श्लोक हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने भी राम कथा को सर्वाधिक लोकप्रियता प्रदान की। 'रामायण शत कोटि अपारा' कहकर उन्होंने राम कथा की विविधता को स्वीकार किया। भारतीय भाषाओं में बांग्ला भाषा में कृतिवास, तमिल में कम्बन, पंजाबी में गुरू गोविन्द सिंह, मराठी में मोरपंत, तेलगु में रंगनाथ और मलयालम में आध्यात्म रामायण महत्वपूर्ण है। विदेशों में चीन, तिब्बत, बर्मा, थाईलैण्ड, इंडोनेशिया, सिंगापुर, जावा, सुमात्रा, बाली में रामकथा काफी लोकप्रिय है। इंडोनेशिया में रामलीलाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। थाइलैण्ड में रामकीर्ति का रामायण बहुत प्रसिद्ध है।" उक्त विचार शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित परिचर्चा 'विश्व फलक पर रामायण' में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के दौरान व्यक्त किये। इस अवसर पर स्नातकोत्तर हिन्दी के छात्र–छात्राओं ने भी रामकथा से जुड़े विविध पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत किये। मुस्कान ने कहा कि "राम कथा से हम व्यवस्था और प्रबंधकीय गुण सीख सकते हैं। राम अयोध्या से खाली हाथ निकले थे पर लंका पहुँचते–पहुँचते उन्होंने अपने इसी गुण के कारण विशाल सेना खड़ी कर ली, जिसमें लक्ष्मण जैसे जिम्मेदार और चौकन्ने व्यक्ति, सुग्रीव जैसे भूगोल के जानकार और जामवन्त जैसे युद्ध नीति, धर्मनीति के जानकार तथा नल–नील जैसे इंजीनियर शामिल थे"। स्नातकोत्तर हिन्दी प्रथम सेमेस्टर के छात्र हितेश ने कहा कि–"महाकवि निराला ने कृतिवास रामायण से प्रेरणा ग्रहण कर 'राम की शक्ति पूजा' जैसी महान कविता की रचना की, जिसमें पराजित होते हुए व्यक्ति और राम को शक्ति की मौलिक कल्पना और आराधना से विजयी होने का सार्वभौमिक संदेश दिया है"। कमलनारायण ने विभीषण के पक्ष में नयी व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि "विभीषण को प्रायः 'घर का भेदी' कहा जाता है पर उसने अपने भाई और एक अत्याचारी राजा के विरोध का साहस दिखाया। आज हमारे समाज में ऐसे साहसी लोगों की आवश्यकता है"। कार्यक्रम का सफल संचालन करते हुए हिन्दी विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. रीता गुप्ता ने कहा कि "समाज में जैसे–जैसे मूल्यहीनता और आदर्शहीनता बढ़ती जा रही है, राम कथा की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। आज रामायण के पुनर्पाठ और उससे मार्गदर्शन प्राप्त करने की आवश्यकता है।

प्रतिष्ठा में–*श्रीमान् ब्यूरो प्रमुख* महोदय, कृपया अपने लोकप्रिय समाचार पत्र में इसे समाचार के रूप में पूर्व की भाँति सचित्र प्रकाशित कर ..... प्रचार–प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दें – **डॉ. सियाराम शर्मा (साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रभारी)** शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला – दुर्ग (छ.ग.)

"श्री राम ने भावुकता, सत्ता और सीता को भी त्यागकर लोकाराधन को महत्ता दी"– डॉ0 महेश शर्मा

चरित्र निर्माण में वाल्मीकि तुलसी साहित्य की भूमिका पर उतई कॉलेज में हुयी गोष्ठी

उतई/राम के जीवन का पथ ही 'रामायण' है। राम के चरित्र की उदात्ता के कारण भारत ही नहीं पूरे विश्व में रामकथा का प्रसार मिलता है। वाल्मीकि ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र को इस प्रकार गढ़ा कि आज भी 'रामायण' पति, पत्नी, पुत्र, भाई, राजा, सखा और सेवक आदि का सर्वोत्तम आदर्श प्रस्तुत करता है। श्री राम ने भावुकता, सत्ता और सीता को भी त्यागकर लोकाराधन किया। जीवन में धन, सम्पत्ति और राज्य आदि सब कुछ क्षणिक है, पर चरित्र का बड़प्पन विश्व को हमेशा प्रेरणा देता है। ऐसे ही दोष रहित चरित्र की रचना के लिए तुलसीदास ने भी वाल्मीकि की वंदना करते हुये उनसे प्रेरणा ली है। तुलसीदास ने आदर्शविहीन मध्ययुग में 'रामचरितमानस' के माध्यम से ऐसे ही आदर्श की स्थापना की जो आज भी न केवल भारतीय जनमानस को अपितु विश्व नागरिकों को भी प्रभावित करता है।" ये विचार आचार्य डॉ0 महेशचन्द्र शर्मा ने शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय उतई में वाल्मीकि जयंती के अवसर पर "चरित्र निर्माण में साहित्य की भूमिका –वाल्मीकि तथा तुलसीदास के विशेष संदर्भ में" विषय पर व्याख्यान देते हुए व्यक्त किये। प्राचार्य डॉ0 शर्मा कार्यक्रम की अध्यक्षता कर हरे थे। इस अवसर पर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो0 सियाराम शर्मा ने कहा कि साहित्य एक तरफ मनुष्य की कमजोरियों की ओर ध्यान दिलाकर उसे दूर करने की प्रेरणा देता है तो दूसरी तरफ सर्वोत्तम चरित्रों को रचकर, उसके समक्ष आदर्श प्रस्तुत करता। महाविद्यालय में आयोजित इस विचार गोष्ठी में अतिथि प्राध्यापिका सुश्री रीना गोटे ने "तुलसी के राम" तथा सुश्री अभिलाषा ने "तुलसी' की भक्ति भावना" पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस अवसर पर एम0ए0 हिन्दी प्रथम सेमेस्टर की छात्राओं–कु0 श्वेता, रेणु, चित्ररेखा, विनीता, नेहा तथा बी0ए0 अंतिम वर्ष की छात्रा कु0 नंदिनी ने वाल्मीकि और तुलसीदास से सम्बंधित विविध पहलुओं पर अपने पर्चे प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 रीता गुप्ता ने किया। इस विचार गोष्ठी में महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ0 ए0 ए0 खान, डॉ0 शुभा शर्मा, डॉ0 पी0 वसंत कला, डॉ0 विद्या पंचांगम, डॉ0 राजबाला गुरु तथा ग्रंथपाल प्रीति शर्मा ने सक्रिय हिम्मेदारी की। कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्राचार्य डॉ0 शर्मा ने कहा कि इस तरह के आयोजनों से विद्यार्थी अपनी परंपरा से परिचित होते हैं तथा उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि होती है।

प्राचार्य
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई जिला - दुर्ग (छ.ग.)

7.1.8

स्पोकन निःशुल्क क्लासेस का दीक्षान्त समारोह आयोजित

उतई, 3 मार्च (देशबन्धु)। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की क्षमता विकास योजना के अनुरूप शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय उतई में दस दिवसीय इंग्लिश स्पोकन क्लासेस का सफल आयोजन किया गया।दीक्षान्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित नगर पंचायत उतई की अध्यक्ष श्रीमती गौरी चन्द्राकर ने प्रशिक्षित विद्यार्थियों को बधाई एवं शुभकामनाये दी।उन्होंने महाविद्यालय में ऐसे कार्यक्रमो की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सराहना की।श्रीमती चन्द्राकर ने प्रशिक्षित विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किये।कार्यक्रम के विशेषज्ञ अतिथि एवं अंग्रेजी में सम्प्रेषण क्षमता विकास के चर्चित प्रशिक्षक डॉण्सलीम अकील थे।उन्होंने प्रशिक्षित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि अंग्रेजी सम्भाषण की आधारभूत जानकारियां विगत दस दिनों में आपने प्राप्त की उस पर अब अमल करने का समय हैं।आपको निरंतर अंग्रेजी में बातचीत करने का प्रयत्न पूर्वक अभ्यास करना होगा।सीखने का सही तरीका किसी कार्य को करना होता हैं।आपको इस दिशा में आगे बढ़ते रहना होगा।जो रुक गया वो पत्थर एजो चल पड़ा इन्सानए आपको इस वाक्य को हमेशा याद रखना होगा।सुनना और बोलना मनुष्य का प्रारंभिक गुण है।गूँगा इसलिए गूँगा होता है कि क्योंकि वह सुन नही सकता।अत: ध्यानपूर्वक सुनना आवश्यक है।बोलने की शुरुआत अच्छी तरह सुनने से होती है।भाषा सीखना हैं तो सुनने की आदत डालिये।पिछले दस दिनों में आपने जो सीखा हैए वह आत्मविश्वास आपके बोलने में दिख रहा है।महाविद्यालय के प्राचार्य एसरंक्षक एवं कार्य शाला के प्रेरक आचार्य डॉण्महेशचन्द्र शर्मा ने कहा कि भाषाए सभ्यताओं और संस्कृतियों के बीच पुल का कार्य करती हैं।अत: अधिक से अधिक भाषाओं को सीखने का प्रयत्न करना चाहिए।अंग्रेजी आज विश्व की सम्पर्क भाषा है।इस भाषा में ज्ञान विज्ञान की प्रचुर सामग्री उपलब्ध है।अत: ज्ञान क क्षेत्र विशेषत: कैरियर के क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर को छूने के लिए आज के समय में अंग्रेजी का भी ज्ञान उपयोगी है।हमारे अधिकांश विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं।और उनकी शिक्षा का माध्यम हिन्दी हैं।स्वाभाविक है कि अंग्रेजी बोलने और पढ़ने में उन्हें दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।उन्हीं समस्याओं को देखते हुए अंग्रेजी के सम्प्रेषण की क्षमता के विकास पर इस दस दिवसीय स्पोकन इंग्लिश सफल आयोजन किया गया।यह तो आपके सीखने की शुरुआत हैए आगे आपको प्रयत्न जारी रखना है।कार्यशाला की प्रशिक्षिका केण्नंदिता ने इस अवसर पर अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि इस महाविद्यालय के छात्र छात्राओं को प्रशिक्षित करना हमारे लिए अत्यन्त ही सुखद अनुभव है।शहर के छात्रों में आज जिज्ञासाएँ चुकती जा रही हैएपर ग्रामीण क्षेत्र के इन विद्यार्थियों में अतीव जिज्ञासाएँ और संभावनाएँ दिखीं।हमने जो इच्छाएँ पाली थींए इन बच्चों में साकार नजर आयीं।आप सबने इतने दिनों जो भी सीखाएवहाँ रुकना नहीं हैएआगे बढ़ते जाना है।आप गलत बोलने से डरें नहीं अगर तैरना सीखना हो तो पानी में कूदना पड़ेगा।आपके शिक्षक आपकी गलतियों को ठीक करेंगे।अंग्रेजी के सम्प्रेषण क्षमता विकास की इस कार्यशाला में 50 से अधिक विद्यार्थियों ने बडी रूचि से हिस्सा लिया।उनके प्रदर्शन के आधर पर कुण्सुनंदा को प्रथम एभुवल्लभ हरि को द्वितीय और अंजली को तृतीय स्थान प्रदान किया गया।

देशबन्धु 08

शनिवार, 04 मार्च 2017

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Scanned with CamScanner

7.1.8

हिन्दी करोड़ों भारतीयों के मस्तिष्क और हृदय को खुराक देने वाली भाषा: शर्मा

उतई ० अक्टूबर (असं)।

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। स्वभाषा, संस्कृति और वेशभूषा हमारी आत्मीयता और पहचान के मूल तत्व हैं। हिन्दी भाषा नेसमस्त राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है। स्वाधीनताआन्दोलन के दौरान राष्ट्रभक्ति के ज्वार को इसने उपर उठाने का कार्यकिया। हिन्दी भरत को करोड़ों जनसाधारण के मन, मस्तिष्क औरहृदय को खुराक प्रदान करने वाली भाषा है। हिन्दी सिर्फ भाषा ही नहीं संस्कृति है। इस भाषा को अमीर खुशरो, तुलसी, कबीर, जायसी, भरतेन्दु, महात्मा गांधी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, कामता प्रसाद गुरु, किशोर दास वाजपेयी, अयोध्यानाथ खत्री के साथ-साथ विदेशियों मेंगार्सादतासी, जार्ज ग्रियर्सन, प्रो.बारान्निकोव्ह, फादर कामिल बुल्के जैसे हिन्दी प्रेमियों ने समृद्ध किया है। लेकिन यह दु:खद है कि राष्ट्र में इसेजितना सम्मान मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाया। उक्त विचारशासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय उतई के प्राचार्य एवं संस्कृत और हिन्दी साहित्य के आचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर छात्र-छात्राओंए कर्मचारियों एवं शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए अभिव्यक्त किये। इस अवसर पर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. सियाराम शर्मा ने कहा कि शहर में किसी भी भाषा से घृणा नहीं करनी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर ज्ञान प्राप्ति के लिए हमें विदेशी भाषाएँ भी सीखनी चाहिए पर हम सबके भीतर अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व और सम्मान का भाव होना चाहिए।

शासकीय महाविद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह

हमारी भाषा हमारे अस्तित्व का आधार है। हम इसी के माध्यम से सोचते और सपने देखते हैं। इस अवसर पर स्नातकोत्तर हिन्दी तृतीय सेमेस्टर की दो छात्राओं ने ब्रजभाषा हिन्दी रू समस्याएँ और समाधान विषय पर अपने महत्त्वपूर्ण शोध पत्र प्रस्तुत किये। अपने पत्रों में कु. अनिता ने कहा कि हिन्दी भाषा को जटिलता को दूर कर हमें इसे जन-जीवन के करीब ले जाने का प्रयास करना चाहिए। हिन्दी के साथ-साथ अन्य भारतीयभाषाओं को भी अपने-अपने राज्यों में महत्व मिलना चाहिए। राष्ट्रीयता के बोध को बढ़ावा देने के लिए अन्तर्भाषायी अनुवाद की भी महती आवश्यकता है। कुमारी चित्ररेखा ने कहा कि हिन्दी हमारे राष्ट्र के गौरव की भाषा है। यह आज भी सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में जोड़तीहै। कार्यक्रम का सफल संचालन करते हुए हिन्दी विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ रीता गुप्ता ने कहा कि में मानसिक गुलामी और अंग्रेजियत से मुक्त होकर देश की करोड़ों जनता की भाषा का सम्मान करना चाहिए। अपने दैनिक क्रियाकलापों और गतिविधियों में ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करना चाहिए। इस विशेष मार्गदर्शन व्याख्यान माला कालाभ बड़ी संख्या में उपस्थित हिन्दी साहित्य और भाषा के विद्यार्थियोंको मिला।

अमृत संदेश

मंगलवार, 10 अक्टूबर 2017

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Scanned with CamScanner

7.1.8

उतई कॉलेज में पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए परिचर्चा का आयोजन

जल्दबाजी में लिखा जाने वाला साहित्य है अखबार

हरिभूमि न्यूज ▸▸ उतई

शासकीय महाविद्यालय उतई में पत्रकारिता के विविध आयाम विषय पर आयोजित परिचर्चा का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार राम अवतार शर्मा थे। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता का कार्य तलवार की धार पर दौड़ने के समान है। अखबार जल्दबाजी में लिखा जाने वाला साहित्य है। पत्रकारिता के मेरे चालीस वर्ष के लंबे कैरियर में दादा कामिल बुल्के का साक्षात्कार लेना अविस्मरणीय घटना है। हिंदी भक्त बुल्के का जन्म भले ही बेल्जियम में हुआ, लेकिन उनका पुनर्जन्म भारत में ही हुआ। अखबार की भाषा सरल, सहज और शुद्ध हो। अखबार के प्रति उत्सुकता कभी कम न हो, तथ्यों की प्रस्तुति में जागरूकता और प्रमाणिकता भी हो। अतिथि युवा पत्रकार मोहम्मद जाकिर हुसैन ने कहा कि पत्रकारिता

का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष साक्षात्कार भी है। साक्षात्कार के पूर्व जिनसे और जिस विषय पर साक्षात्कार लेने जा रहे हैं, उनके विषय में हमारी पूरी तैयारी होनी चाहिए। आजकल यू-ट्यूब आदि हमारी अच्छी मदद कर सकते हैं। उन्होंने इंदिरा गांधी से लिए गए महत्त्वपूर्ण साक्षात्कारों और साक्षात्कारकर्त्ताओं के भी उदाहरण दिए। विद्यार्थियों को उन्होंने एसाइनमेंट के विषय में मार्गदर्शन भी दिया। उन्होंने कहा कि साक्षात्कार हेतु पत्रकार को निर्भीक होना चाहिए। पत्रकारिता से जुड़े साहित्यविद् प्राचार्य डॉ. महेशचंद्र शर्मा ने कहा कि श्रेष्ठ पत्रकारिता न केवल समाज का संरक्षण और मार्गदर्शन करती है, अपितु वह उसे पतन से भी बचाती है। पत्रकार रोशन सिंह बम्भोले ने कहा कि ग्रामीणक्षेत्र के पत्रकार लोहे की जंजीर को कलम के वार से काटते हैं। सुरेंद्र शर्मा ने कहा कि ग्रामीण पत्रकारिता बड़े कठिन दौर से गुजर रही है। हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. सियाराम शर्मा ने कहा कि वर्तमान पत्रकारिता व्यवसाय का साधन बनकर रह गई है। पत्रकारिता की छात्रा चित्ररेखा कुर्रे ने अपना शोध लेख प्रस्तुत किया। इस दौरान रामअवतार शर्मा, जाकिर हुसैन, रोशन सिंह बम्भोले, सुरेंद्र शर्मा, हरीसिंह जख्मी, घनश्याम गजपाल एवं राजेश बंजारे का अभिनंदन किया गया। संचालन हिंदी विभाग की प्राध्यापक डॉ. रीता गुप्ता ने किया। छात्रसंघ अध्यक्ष रेणु यादव ने कॉलेज की उत्तम व्यवस्था व ऐसे आयोजनों के लिए महाविद्यालय प्रबंधन का आभार माना।

हरिभूमि

गुरुवार 23 नवंबर 2017

समाचार पत्रों में रहती है नई-नई जानकारियां, भाषा भी सरल:शर्मा

उतई कॉलेज में पत्रकारिता दिवस पर हुई परिचर्चा, वक्ताओ ने रखे अखबार के संदर्भ मे अपने विचार।

भास्कर न्यूज | उतई

उतई कॉलेज के प्राचार्य डॉ. महेश चंद्र शर्मा ने कहा कि श्रेष्ठ पत्रकारिता समाज के संरक्षण का काम करती है। साथ ही लोगों को न्याय भी दिलाती है। अखबार की भाष सरल और सहज होती है। इसे पढ़ने वाले समाज के सभी वर्ग के लोग होते हैं। यह बातें उन्होंने उतई कॉलेज में पत्रकारिता दिवस पर हुए कार्यक्रम में कही।

कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार रामअवतार शर्मा ने छात्रों को संपादकीय का लेखन, साक्षात्कार, पेज डिजाइनिंग, आचार संहिता और प्रेस प्रबंधन आदि विषयों की जानकारी दी। विभिन्न विषयों पर परिचर्चा भी हुई। पत्रकार रोशन सिंह बमभोले ने ग्रामीण पत्रकारिता की चुनौतियों के बारे में बताया। कार्यक्रम को सुरेंद्र शर्मा, हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. सियाराम शर्मा, चित्ररेखा कुर्रे और रीता गुप्ता ने संबोधित किया। इसके बाद कॉलेज परिसर का भ्रमण किया। यहां की हरियाली और स्वच्छता की सराहना की गई। साथ ही नशा करने वालों द्वारा फैलाई गंदगी पर चिंता व्यक्त की गई। छात्रसंघ अध्यक्ष रेणु यादव ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

दैनिक भास्कर

मंगलवार 21 नवंबर, 2017

Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Scanned with CamScanner

आयोजन

उतई कॉलेज के हिन्दी विभाग में छत्तीसगढ़ी राजभाषा की महत्ता पर संगोष्ठी, वक्ताओं ने दी जानकारी

छत्तीसगढ़ी बोली हमारी समस्त प्रगति का मूल आधार

उतई। नईदुनिया न्यूज

किसी भी देश, राज्य या समाज को अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए। भाषा हमारी समस्त प्रगति का मूलाधार है। कोई भी आत्सम्मानी समाज अपनी भाषा में बात करने में गर्व का अनुभव करता है। हम सभी छत्तीसगढ़वासियों को छत्तीसगढ़ी में बात करने में शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए। यह बातें साहित्याचार्य एवं शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय उतई के प्राचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने उतई कॉलेज में आयोजित संगोष्ठी में कही।

उन्होंने कहा कि किसी भी भाषा का निर्धारण उसकी संरचना से होता है। आवश्यकतानुसार आप छत्तीसगढ़ी में दूसरी भाषा का प्रयोग बेहिचक कर सकते हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा की इसी उदारता और सरलता के कारण ही उसकी प्रगति हुई है और होगी भी। इस पर व्याकरण लिखने वाले पहले विद्वान हीरालाल काव्योपाध्याय हैं। मुकुटधर पाण्डेय ने मेघदूत का छत्तीसगढ़ी में अनुवाद कर छत्तीसगढ़ी भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता को प्रमाणित किया था। आगे चलकर स्व. हरि ठाकुर, श्यामलाल चतुर्वेदी आदि लेखकों और कवियों ने इसके विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। छत्तीसगढ़ की संस्कृति और छत्तीसगढ़ी भाषा को विश्व में लोकप्रिय बनाने का कार्य, स्व. सन्त पवनदीवान, स्व. डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा, स्व. देवदास बंजारे और हबीब तनवीर,पद्मभूषण तीजन बाई, लक्ष्मण मस्तूरिया, रामेश्वर वैष्णव एवं मुकुन्दकौशल जैसे कवि एवं कलाकारों ने किया। संजीव तिवारी जैसे युवा आज छत्तीसगढ़ी को इन्टरनेट और गूगल के उपयुक्त बनाने के लिए सराहनीय प्रयास कर रहे हैं।

उतई कॉलेज में आयोजित संगोष्ठी में शामिल छात्र-छात्राएं। फोटो : नईदुनिया

समस्त बोलियों में मधुरतम है छत्तीसगढ़ी

इस अवसर पर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. सियाराम शर्मा ने कहा कि जिस तरह छत्तीसगढ़ के लोग सरल और सहज हैं उसी तरह छत्तीसगढ़ी भाषा भी हिन्दी की समस्त बोलियों में मधुरतम भाषा है।। अपनी भाषा, संस्कृति, लोकगीत और नृत्य की दृष्टि से छत्तीसगढ़ उत्तर भारत के समस्त राज्यों में अग्रणी है। इसकी समस्त परम्परा को संरक्षित और सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ी राजभाषा पर एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ. अनुसुईया जोगी ने छत्तीसगढ़ के महत्व पर छत्तीसगढ़ी भाषा में स्वरचित कविता का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य डॉ. शर्मा के द्वारा छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य पर केन्द्रित विविध पाठ्य सामग्री विद्यार्थियों के बीच वितरित की गई। मौके पर बड़ी संख्या में उपस्थित युवा प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के शिक्षाप्रद एवं मार्गदर्शक व्याख्यान का भरपूर लाभ उठाया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. रीता गुप्ता ने किया।

नईदुनिया
रायपुर, शुक्रवार 15 दिसंबर 2017

PRINCIPAL
Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt. Durg (C.G.)

» उतई कॉलेज के हिन्दी विभाग में छत्तीसगढ़ी छात्रों के लिए संगोष्ठी का सफल आयोजन

भाषा हमारी समस्त प्रगति का है मूलाधार : आचार्य डॉ. शर्मा

दबंग रिपोर्टर ▸ उतई

किसी भी देश, राज्य या समाज को अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए। भाषा हमारी समस्त प्रगति का मूलाधार है। कोई भी आत्सम्मानी समाज अपनी भाषा में बात करने में गर्व का अनुभव करता है।

हम सभी छत्तीसगढ़ी वासियों को छत्तीसगढ़ी में बात करने में शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए। किसी भी भाषा का निर्धारण उसकी संरचना से होता है। आवश्यकतानुसार आप छत्तीसगढ़ी में दूसरी भाषा का प्रयोग बेहिचक कर सकते हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा की इसी उदारता और सरलता के कारण ही उसकी प्रगति हुयी हैं, और होगी भी। इस पर व्याकरण लिखने वाले पहले विद्वान हीरालाल काव्योपाध्याय हैं। मुकुटधर पाण्डेय ने मेघदूत का छत्तीसगढ़ी में अनुवाद कर छत्तीसगढ़ी भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता को प्रमाणित किया था। आगे चलकर स्व. हरि ठाकुर, श्यामलाल चतुर्वेदी आदि लेखकों और कवियों इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। छत्तीसगढ़ की संस्कृति और छत्तीसगढ़ी भाषा को विश्व में लोकप्रिय बनाने का कार्य, स्व. सन्त पवनदीवान, स्व. डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा, स्व. देवदास बंजारे और हबीब तनवीर,पद्मभूषण तीजन बाई, लक्ष्मण मस्तूरिया, रामेश्वर वैष्णव एवं मुकुन्दकौशल जैसे कवि एवं कलाकारों ने किया। संजीव तिवारी जैसे युवा आज छत्तीसगढ़ी को इन्टरनेट और गूगल के उपयुक्त बनाने हेतु सराहनीय प्रयास कर रहे हैं।

उक्त, विचार साहित्याचार्य एवं शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय उतई के प्राचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने छत्तीसगढ़ी राजभाषा की महत्ता पर साहित्य के स्नातकोत्तर एवं स्नातक कक्षाओं के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये।

छत्तीसगढ़ उत्तर भारत के समस्त राज्यों में अग्रणी

इस अवसर पर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. सियाराम शर्मा ने कहा कि जिस तरह छत्तीसगढ़ के लोग सरल और सहज हैं उसी तरह छत्तीसगढ़ी भाषा भी हिन्दी की समस्त बोलियों में मधुरतम भाषा है। अवधी और बघेली से इसका बहनापा है। अपनी भाषा, संस्कृति, लोकगीत और नृत्य की दृष्टि से छत्तीसगढ़ उत्तर भारत के समस्त राज्यों में अग्रणी है। इसकी समस्त परम्परा को संरक्षित और सुरक्षित रखने की आवश्यकता है।

छत्तीसगढ़ी राजभाषा पर एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ. अनुसुईया जोगी ने छत्तीसगढ़ के महत्त्व पर छत्तीसगढ़ी भाषा में स्वरचित कविता का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य डॉ. शर्मा के द्वारा छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य पर केन्द्रित विविध पाठ्य सामग्रीयाँ विद्यार्थियों के बीच वितरित की गयीं। मौके पर बड़ी संख्या में उपस्थित युवा प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के शिक्षाप्रद एवं मार्गदर्शक व्याख्यान का भरपूर लाभ उठाया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभागकी वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. रीता गुप्ता ने किया।

patrika.com
पत्रिका . भिलाई . मंगलवार . 23.01.2018

8.1.7

Scanned by TapScanner

भाषा हमारी समस्त प्रगति का मूलाधार है : शर्मा

उतई 15 दिसंबर (असं)।

किसी भी देश, राज्य या समाज को अपनी भाषा परगर्व होना चाहिए। भाषा हमारी समस्त प्रगति का मूलाधार है। कोई भी आत्सम्मानी समाज अपनी भाषा में बात करने में गर्व का अनुभव करताहै। हम सभी छत्तीसगढ़ी वासियों को छत्तीसगढ़ी में बात करने में शर्ममहसूस नहीं करनी चाहिए। किसी भी भाषा का निर्धारण उसकी संरचना से होता है। आवश्यकतानुसार आप छत्तीसगढ़ी में दूसरी भाषा का प्रयोग बेहिचक कर सकते हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा की इसी उदारता और सरलता के कारण ही उसकी प्रगति हुयी हैं और होगी भी। इस परव्याकरण लिखने वाले पहले विद्वान् हीरालाल का व्योपाध्याय हैं। मुकुटधर पाण्डेय ने मेघदूत का छत्तीसगढ़ी में अनुवाद कर छत्तीसगढ़ी भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता को प्रमाणित किया था। आगे चलकर स्वण् हरि ठाकुरए श्यामलाल चतुर्वेदी आदि लेखकों और कवियों इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। छत्तीसगढ़ की संस्कृति और छत्तीसगढ़ी भाषा को विश्व में लोकप्रिय बनाने का कार्य, स्वण् सन्त पवनदीवान, स्व. डॉ नरेन्द्र देव वर्मा, स्व. देवदास बंजारे और हबीब तनवीर, पद्मभूषण तीजन बाई, लक्ष्मण मस्तूरिया, रामेश्वर वैष्णव एवं मुकुन्द कौशल जैसे कवि एवं कलाकारों ने किया। संजीव तिवारी जैसे युवा नेआज छत्तीसगढ़ी को इन्टरनेट और गूगल के उपयुक्त बनाने हेतु सराहनीय प्रयास कर रहे हैं।

उक्त, विचार साहित्याचार्य एवं शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय उतई के प्राचार्य डॉ महेशचन्द्र शर्मा ने छत्तीसगढ़ी राजभाषा की महत्ताश् पर साहित्य के स्नातकोत्तर एवं स्नातक कक्षाओं के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। इसअवसर पर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो सियाराम शर्मा ने कहा कि रिजसतरह छत्तीसगढ़ के लोग सरल और सहज हैं उसी तरह छत्तीसगढ़ी भाषा भी हिन्दी की समस्त बोलियों में मधुरतम भाषा है। अवधी और बघेली से इसका बहनापा है। अपनी भाषा, संस्कृति, लोकगीत और नृत्य की दृष्टि से छत्तीसगढ़ उत्तर भारत के समस्त राज्यों में अग्रणी है। इसकी समस्त परम्परा को संरक्षित और सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ी राजभाषा पर एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ अनुसूईया जोगी ने छत्तीसगढ़ के महत्त्व पर छत्तीसगढ़ी भाषा मेंस्वरचित कविता का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य डॉ शर्मा के द्वारा छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य पर केन्द्रित विविध पाठ्य सामग्रीयाँ विद्यार्थियों के बीच वितरित की गयीं। मौके पर बड़ी संख्या में उपस्थित युवा प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के शिक्षाप्रद एवं मार्गदर्शक व्याख्यान का भरपूर लाभ उठाया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभागकी वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ रीता गुप्ता ने किया।

अमृत संदेश

शक्कर में मिठास की तरह समाई हुई है सांस्कृतिक विरासत : शर्मा

एजुकेशन रिपोर्टर | भिलाई

संगोष्ठी में आचार्य डॉ. महेशचंद शर्मा।

रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भिलाई के आचार्य डॉ. महेशचंद्र शर्मा बतौर विषय विशेषज्ञ के रूप में शामिल हुए। जहां उन्होंने हर मुद्दे पर अपनी राय रखी और समाज में हो रहे बदलाव को भी बताया।

विद्याभारती सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ प्रांत रायपुर एवं पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ व छ.ग. स्वामीविवेकानद तकनीकी विश्व विद्यालय, दुर्ग के संयुक्त तत्वावधान में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। डॉ. शर्मा ने कहा कि प्रतिभा में भारत ही हमारा आराध्य राष्ट्र देव है। वैदिक और पौराणिक साहित्य में राष्ट्र देव को हिन्दुस्तान भी कहा गया है। चंदन में शीतलता, फूलों में सुगन्ध और शक्कर मिठास की तरह हमारी सांस्कृतिक विरासत में राष्ट्रीयता समाई हुई है। राष्ट्र शब्द भी बहुत पुराना है। ये अंग्रेजों की देन नहीं है। इस संगोष्ठी में 100 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। संगोष्ठी में विद्याभारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रो.डॉ. गोविंद शर्मा, विश्वविद्यालय नियामक आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. सत्यनारायण अग्रवाल, कुलपति डॉ. मुकेश वर्मा, डॉ.मानसिंह परमार, प्रो. युगल भारती, राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष चंद्रशेखर साहू, विद्याभारती के प्रांतीय प्रशिक्षण एवं परीक्षा प्रभारी भानुप्रकाश सोनी आदि मौजूद थे।

दैनिक भास्कर

बुधवार 03 जनवरी, 2018

(12)

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

8.1.7

Scanned by TapScanner

7.1.8

उतई कॉलेज में मनाया गया विश्व मातृभाषा प्रसंग

मातृभाषा का संसार में कोई विकल्प नहीं- डॉ. शर्मा

■ हमारे प्रतिनिधि | उतई.

मनुष्य की शोभा सोने के कुंडल, बाजूबंद, हार, उबटन, केश सज्जा और फूलों से नहीं बढ़ती. वाणी और भाषा ही मनुष्य को सुशोभित करती है. भाषा हमारे मनुष्यहोने का आधार और प्रमाण है. यह हमारे समस्त ज्ञान काआधार है. भाषा परम्परा और संस्कृति की वाहिका है.

माता, मातृभूमि, मातृ संस्कृति और मातृभाषा का संसार में कोईविकल्प नहीं है.. उक्त उद्‌गार शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय उतई के प्राचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशानिर्देश पर महाविद्यालय में विश्व मातृभाषा प्रसंग परआयोजित मातृभाषा के महत्व पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए अभिव्यक्त की. अंग्रेजी विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. पी वसंत कला ने कहा कि किसी भी व्यक्ति की नैसर्गिक प्रतिभा अपनी मातृभाषा में ही निखरती है. हम में से हर व्यक्ति को अपनी मातृभाषा परगर्व होना चाहिए. अवसर पर एनसीसी कीअनुसूईया जोगी ने कहा कि हम मूलतः अपनी मातृभाषा में ही सोचते और महसूस करते हैं. इसीलिए यह सबसे मधुर है.

विश्व मातृभाषा प्रसंग पर आयोजित कार्यक्रम संबोधित करते अतिथि

एनएसएस अधिकारी राकेश मिंज ने मातृभाषा के महत्व पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मातृभाषा को एक दिन नहीं, हमेशा अपने दिल में रखने की आवश्यकता है. हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व करना चाहिए. कमल नारायण ने छत्तीसगढ़ी भाषा में रोचक गीत गाया. इस अवसर पर के छात्र प्रभात कुमार ने किसानों पर केन्द्रित स्वरचित सुन्दर छत्तीसगढ़ी कविता का पाठ किया. पूषण ओझा ने देश हमरसोने की चिरैया गीत का गायन किया. डॉ. अनुसूईया जोगी एवं डॉ. पी वसंत कला ने भी छत्तीसगढ़ी और तेलगू में गीत सुनाये. आचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने देववाणी संस्कृत में पद्यों की सस्वर प्रस्तुति से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया. कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. सियाराम शर्मा ने अनेक उदाहरण देकर हिन्दी कविता के साथ किया.

नवभारत
सोमवार, 5 मार्च 2018

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Scanned with CamScanner

7.1.8

हिन्दी कैरियर की नहीं, संस्कार की भाषा है : हिमांशु

उतई 4 अक्टूबर (असं)।

हिन्दी कैरियर की नहीं, संस्कार की भाषा है। 'हिन्दी नहीं आती' यह गौरव का नहीं, लज्जा का विषय है। यह हिन्दी की सबसे बड़ी खासियत है कि इसकी वर्णमाल 'अ' के अनपढ़ से शुरू होकर 'ज्ञ' के ज्ञानी से समाप्त होती है। यह हिन्दी भाषा की ही श्रेष्ठता है, जिसने 'हनुमान चालीसा' के माध्यम से आराध्य राम से ज्यादा लोकप्रिय उनके सेवक हनुमान को बना दिया। हम एक हजार वर्षों तक हम गुलाम रहे पर हमारी भाषा उसी दौर में विकसित हुई। हिन्दी को संरक्षण की आवश्यकता नहीं है, वह संघर्ष की भाषा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व पत्रकारिता मिशन थी पर आज प्रोफेशन बन गयी है। उस दौर में बड़े-बड़े राजनेताओं ने स्वाधीनता प्राप्ति के उद्देश्य से पत्रकारिता की। गुजराती भाषी होते हुए भी गाँधी जी हिन्दी में पत्रकारिता की और यहाँ तक घोषित किया कि 'गाँधी अंग्रेजी भूल गया है।' वे इस बात से अच्छी तरह से परिचित थे कि हिन्दी भाषा के माध्यम से ही जनता को आन्दोलित किया जा सकता है। आज पत्रकारिता पर विज्ञापनदाताओं का कब्जा है। इन्हीं के कारण सबसे सस्ता अखबार हिन्दुस्तान में मिलता है। बाजिब सूचनाओं और ज्ञान के लिए पाठकों को भी उसकी कीमत चुकानी होगी। हिन्दी का अतीत उज्ज्वल रहा है उसके भविष्य का मार्ग भी उज्ज्वल रहेगा। उक्त विचार प्रधान संपादक एवं भाषाविद् हिमांशु द्विवेदी ने 'हिन्दी में पत्रकारिता' विषय पर शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित अतिथि व्याख्यान के विशेषज्ञ मुख्य अतिथि के रूप में छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्कृत के विद्वान और संस्कृति मर्मज्ञ आचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने कहा कि पत्रकार और साहित्यकार दोनों सहोदर भाई हैं। समाज को बनाने में पत्रकारों का बहुत बड़ा योगदान है। पत्रकार और लेखक की ही यह शक्ति है कि किसी के व्यक्तित्व को हिमालय के उत्कर्ष तक पहुँचा दे या किसी को पतन के गर्त में गिरा दे। पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा खंभा है। यह लोकतंत्र की जीवनी शक्ति है। यह जनता की चेतना के विकास और परिष्कार का माध्यम भी है। इस अवसर पर युवा कवि और पत्रकार मयंक चतुर्वेदी ने कहा कि साहित्य की भाषा और पत्रकारिता की भाषा अलग-अलग है।

आप अखबार की भाषा पढ़कर हिन्दी के मर्मज्ञ नहीं हो सकते। हमारे समाज में कई लोग आज हिन्दी नही आती यह कहने में गौरव महसूस करते हैं। हिन्दी नहीं आना कोई उपलब्धि नहीं है। हमारी भाषा के प्रत्येक शब्द का अपना मौलिक अर्थ होता है। शब्द एक दूसरे के बिलकुल समानार्थी नहीं होते। हवा, पवन, समीर, वायु सबके अलग-अलग अर्थ हैं।

अरबी-फारसी के शब्दों को अखबार वाले सही ढंग से नहीं लिखते। जनसाधारण की प्रवृत्ति भी जानने की नहीं रहती, जो मिल जाता है, उसे स्वीकार कर लेते हैं। हिन्दी भाषा को लेकर लोगों का व्यवहार उ हल्के-फुल्के ढंग से लेने का है। यह नजरि त्यागना होगा। अतिथि व्याख्यान का प्रार अतिथियों के स्वागत से हुआ। डॉ. हिमां द्विवेदी एवं कवि मयंक चतुर्वेदी 'मानस' व अभिनंदन संस्था के प्राचार्य डॉ. महेशच शर्मा ने शॉल-श्रीफल से किया। हिन्द विभागाध्यक्ष डॉ. सियाराम शर्मा आयोजकीय वक्तव्य दिया। डॉ. रीता गुप्ता कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि एव विशिष्ट अतिथि के साथ-साथ नगर पंचायत उतई के स्थानीय पत्रकारों का भी शॉल श्रीफल एवं उत्तरीयम से सम्मानित किय गया। स्थानीय पत्रकारों में रोशन सिंह बंभोले, राजेश बंजारे, घनश्याम गजपाल लेखराम सोनवानी, तथा भिलाई से पधारे वरिष्ठ पत्रकार मो. जाकिर की उपस्थिति ने कार्यक्रम को गरिमा प्रदान किया।

अमृत संदेश

42

शुक्रवार, 5 अक्टूबर 2018

हिंदी करियर की नहीं, संस्कार की भाषा इसे संरक्षण की जरूरत नहीं: डॉ. हिमांशु

भास्कर न्यूज | उतई

शासकीय दानवीर तुलाराम कॉलेज में पत्रकारिता विषय पर हुई कार्यशाला।

हिन्दी कैरियर की नहीं, संस्कार की भाषा है। हिन्दी नहीं आती यह गौरव का नहीं, लज्जा का विषय है। यह हिन्दी की सबसे बड़ी खासियत है कि इसकी वर्णमाल 'अ' के अनपढ़ से शुरू होकर 'ज्ञ' के ज्ञानी से समाप्त होती है। यह हिन्दी भाषा की ही श्रेष्ठता है, जिसने 'हनुमान चालीसा' के माध्यम से आराध्य राम से ज्यादा लोकप्रिय उनके सेवक हनुमान को बना दिया।

एक हजार वर्षों तक हम गुलाम रहे पर हमारी भाषा उसी दौर में विकसित हुई। हिन्दी को संरक्षण की आवश्यकता नहीं है, वह संघर्ष की भाषा है। यह विचार भाषाविद् डॉ. हिमांशु द्विवेदी ने हिंदी में पत्रकारिता विषय पर शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई में आयोजित अतिथि व्याख्यान के दौरान रखे। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व पत्रकारिता मिशन थी पर आज प्रोफेशन बन गई है। उस दौर में बड़े-बड़े राजनेताओं ने स्वाधीनता प्राप्ति के उद्देश्य से पत्रकारिता की। गुजराती भाषी होते हुए भी गांधीजी ने हिंदी में पत्रकारिता की और यहां तक घोषित किया कि गांधी अंग्रेजी भूल गया है। वे इस बात से अच्छी तरह से परिचित थे कि हिन्दी भाषा के माध्यम से ही जनता को आंदोलित किया जा सकता है। इसके लिए युवाओं को भी आगे आना होगा।

दैनिक भास्कर

शुक्रवार 05 अक्टूबर, 2018 | 18

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Scanned by TapScanner

7·1·8

'हिंदी कॅरियर की नहीं, संस्कार की भाषा है'

शासकीय महाविद्यालय उतई में पत्रकारिता में हिंदी पर व्याख्यान

उतई। नईदुनिया न्यूज

'हिंदी कॅरियर [illegible] नहीं, संस्कार की भाषा है। हिंदी नहीं आती [illegible] गौरव का नहीं, [illegible] का विषय है। हिंदी की सबसे बड़ी खासियत है कि इसकी वर्णमाला [illegible] से शुरू होकर [illegible] के ज्ञानी पर समाप्त होती है। हिंदी भाषा की ही श्रेष्ठता है, जिसने [illegible] चालीसा के माध्यम से [illegible] से ज्यादा लोकप्रिय उनके सेवक हनुमान को बना दिया। हिंदी को संरक्षण की आवश्यकता नहीं है, वह संघर्ष की भाषा है।'

उक्त बातें वरिष्ठ पत्रकार व भाषाविद हिमांशु द्विवेदी ने हिंदी में पत्रकारिता विषय पर उतई कॉलेज में आयोजित अतिथि व्याख्यान में विशिष्ट मुख्य अतिथि के रूप में [illegible] एवं शिक्षकों को संबोधित करते हुए कही। डॉ. द्विवेदी ने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व पत्रकारिता मिशन थी लेकिन आज प्रोफेशन बन गयी है। उस दौर में बड़े-बड़े राजनेताओं ने स्वाधीनता प्राप्ति के उद्देश्य से पत्रकारिता की। गुजराती भाषी होते हुए भी गांधी जी ने हिंदी में पत्रकारिता की। वे इस बात से अच्छी तरह से परिचित थे कि हिंदी भाषा के माध्यम से ही जनता को आंदोलित किया जा सकता है। आज पत्रकारिता पर विज्ञापनदाताओं का कब्जा है। इन्हीं के कारण सबसे सस्ता अखबार हिन्दुस्तान में मिलता है। सूचनाओं और ज्ञान के लिए पाठकों को भी उसकी कीमत चुकानी होगी। डॉ. हिमांशु द्विवेदी ने नईदुनिया की तारीफ की। उन्होंने कहा कि यह देश का एकमात्र ऐसा अखबार है जिसने आपातकाल के समय अपने संपादकीय पृष्ठ को कोरा छोड़ दिया था। अतिथि व्याख्यान के प्रारंभ में अतिथियों के स्वागत से हुआ। डॉ. हिमांशु द्विवेदी एवं कवि मयंक चतुर्वेदी मानस का अभिनंदन संस्था के प्राचार्य डॉ. [illegible] शर्मा ने शॉल-श्रीफल से किया। हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. सियाराम शर्मा ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। डॉ. रीता गुप्ता ने संचालन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि के साथ-साथ नगर पंचायत उतई व भिलाई के पत्रकारों मोहम्मद जाकिर हुसैन, रोशन सिंह बंभोले, राजेश बंजारे, घनश्याम गजपाल, लेखराम सोनवानी, देवेन्द्र पटेल का शॉल, श्रीफल से सम्मान किया गया।

उतई कॉलेज में अतिथि व्याख्यान के दौरान [illegible] का सम्मान करते वरिष्ठ पत्रकार हिमांशु द्विवेदी व अन्य अतिथि।

समाज को बनाने में पत्रकारों का बहुत बड़ा योगदान

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्कृत के विद्वान और संस्कृति मर्मज्ञ आचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने कहा कि पत्रकार और साहित्यकार दोनों सहोदर [illegible] हैं। समाज को [illegible] में पत्रकारों का बहुत बड़ा योगदान है। पत्रकार और लेखक की ही [illegible] शक्ति है कि किसी के व्यक्तित्व को हिमालय के शिखर तक पहुंचा दे या किसी को पतन के गर्त में गिरा दे। पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा खंभा है। यह लोकतंत्र की जीवन शक्ति है। यह जनता की चेतना के विकास व परिष्कार का माध्यम भी है।

साहित्य और पत्रकारिता की भाषा अलग-अलग

[illegible] चतुर्वेदी ने कहा कि साहित्य की भाषा और पत्रकारिता की भाषा अलग-अलग है। आप अखबार की भाषा पढ़कर हिंदी के मर्मज्ञ नहीं हो सकते। हमारे समाज में कई लोग आज हिंदी नहीं आती यह कहने में [illegible]। हिंदी [illegible] नहीं है। [illegible] भाषा के प्रत्येक शब्द का अपना मौलिक अर्थ होता है। शब्द एक दूसरे के बिलकुल समानार्थी नहीं होते। हवा, पवन, समीर, वायु सबके अलग-अलग अर्थ है। अरबी-फारसी के शब्दों को अखबारों ने स्वीकारा लेकिन शुद्धता को बरकरार नहीं रखा। जनसाधारण की प्रवृति भी जानने की नहीं रहती, जो मिल जाता है, उसे स्वीकार कर लेते है। हिंदी भाषा को लोग हल्के-फुल्के ढंग से लेते है। यह नजरिया त्यागना होगा।

नईदुनिया 19
रायपुर, शुक्रवार 05 अक्टूबर 2018

(4,4)

हिन्दी कैरियर की नहीं, संस्कार की भाषा है: डॉ. हिमांशु द्विवेदी

दबंग रिपोर्टर ◻ उतई

[illegible] कैरियर की नहीं, संस्कार की भाषा है। हिन्दी नहीं आती [illegible] गौरव [illegible], लज्जा का विषय है। यह हिन्दी की सबसे बड़ी खासियत है कि इसकी वर्णमाला [illegible] से शुरू होकर [illegible] के ज्ञानी में समाप्त होती है। यह हिन्दी भाषा की ही श्रेष्ठता है, जिसने हनुमान चालीसा के माध्यम से आराध्य राम से ज्यादा लोकप्रिय उनके सेवक हनुमान को बना दिया। हम एक हजार वर्षों तक [illegible] रहे पर हमारी भाषा उसी तौर में [illegible] हुई। हिन्दी को संरक्षण की आवश्यकता नहीं है, यह संघर्ष की भाषा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व पत्रकारिता मिशन थी पर आज प्रोफेशन बन गयी है। उस दौर में बड़े बड़े राजनेताओं ने स्वाधीनता प्राप्ति के उद्देश्य से पत्रकारिता की। गुजराती भाषी होते हुए भी गांधी जी हिन्दी में पत्रकारिता की और यहां तक घोषित किया कि गांधी अंग्रेजी भूल गया है। वे इस बात से अच्छी तरह से परिचित थे कि हिन्दी भाषा के माध्यम से ही जनता को आन्दोलित किया जा सकता है। आज पत्रकारिता पर विज्ञापनदाताओं का कब्जा है। इन्हीं के कारण सबसे सस्ता अखबार हिन्दुस्तान में मिलता है। आज के सूचनाओं और ज्ञान के लिए पाठकों को भी उसकी कीमत चुकानी होगी। हिन्दी का [illegible] उज्ज्वल रहा है उसका भविष्य का मार्ग भी उज्ज्वल रहेगा। [illegible] प्रधान संपादक एवं भाषाविद हिमांशु द्विवेदी ने हिन्दी में पत्रकारिता विषय पर शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित अतिथि व्याख्यान के विशेषज्ञ मुख्य अतिथि के रूप में छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

दबंग दुनिया
शुक्रवार, 5 अक्टूबर 2018

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College

Scanned with CamScanner

7.1.8

उतई और मचान्दुर कॉलेज ने संयुक्त रूप से मनाया कौमी एकता सप्ताह

कौमी एकता का स्वर्णिम शिलान्यासःआचार्य डॉ महेश

हरिभूमि न्यूज ▸▸ उतई

शासन के निर्देशानुसार शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई और दाऊ उत्तम साव शासकीय महाविद्यालय मचान्दुर द्वारा संयुक्त रूप से कौमी एकता सप्ताह का प्रेरक आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्राचार्य डॉ महेशचन्द्र शर्मा के मार्गदर्शन में अनेकता में एकता, हमारी विशेषता विषय पर केंद्रित भाषण, निबन्ध लेखन, नारालेखन एवं गायन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कर विद्यार्थियों को प्रेरित किया गया। कॉलेज की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिषद के साथ ही रासेयो और एनसीसी के स्टाफ और कैडेट्स ने भी कौमी एकता, भाईचारे और सद्भावना पर केंद्रित इस आयोजन के प्रति छात्र-छात्रों को जोड़ने का प्रयास किया। अनेकता में एकता पर केन्द्रित व्याख्यान माला का भी आयोजन किया गया। साहित्य-संस्कृति विद् प्राचार्य डॉ महेशचन्द्र शर्मा ने अध्यक्षता करते हुए इसे युवावर्ग के साथ सभी के लिये विशेष उपयोगी बताया। आचार्य डॉ शर्मा ने भारत के स्वर्णिम सांस्कृतिक इतिहास से अनेक प्रमाण देते हुए, देश की साझी विरासत के प्रेरक उदाहरण भी दिए। उन्होंने अर्थर्ववेद से उदाहरण देते हुये बताया कि हमारी धरती माता विविध भाषा भाषियों और धर्मावलम्बियों का घर है। कामधेनु की तरह हम सबकी भारत भूमि ने धन-धान्य की हजारों धारायें बहाकर इसे सोने की चिड़िया बनाया है। विश्वगुरु भारत के वाल्मीकि, तुलसी और विश्व के महानायक राजारामचन्द्र जी ने इसी जन्मभूमि को स्वर्ग से महा- बताया और कहा कि स्वतन्त्रता सेनानियों ने ली है। इनसे प्रेरणा ज्योतिषाचार्य एवं नीति शास्त्री महाकवि रहीम, श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त रसखान, मीर तकी मीर और नजीर अक़बराबादी के दोहों, गीतों और नज़्मों ने मिलकर क़ौमी एकता का पैगाम इस देश को बहुत पूर्व में ही दे दिया था। तथ्य तो ये हैं कि वेदज्ञ पंडितों और महान शायरों ने कौमी एकता का स्वर्णिम शिलान्यास पहले ही कर दिया।

मौके पर साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद के संयोजक डॉ सियाराम शर्मा ने प्रस्तावना रखते हुए सभी धर्मों की अच्छाईओं का उल्लेख किया। प्रो अब्दुल अलीम खान ने देश की साझी विरासत की सराहना की। डॉ पंकज सोनी, प्रो खिलेश चन्द्राकार, सुश्री पूजा परगनिहा और प्रो प्रमोद चौरे आदि शिक्षकों ने भी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन दिया।

रवीना टंडन, शारदा और मीनाक्षी पटेल आदि विद्यार्थियों ने भी अपने भाषण में कौमी एकता को रेखांकित कर वाहवाही लूटी। कार्यक्रम का समन्वय और संचालन प्रो राकेश मिंज ने और आभार ज्ञापन डॉ पंकज सोनी ने किया। इस देश भक्ति पूर्ण और शिक्षाप्रद कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थीगण लाभान्वित हुए। सभी ने मुक्तकंठ से इसकी सराहना की।

हरिभूमि 14

सोमवार 26 नवंबर 2018

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Scanned by TapScanner

7·1·8

ANCHOR उतई और मचांदुर कॉलेज का संयुक्त कार्यक्रम

स्टूडेंट्स को दी मिलजुल कर रहने की सीख

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

भिलाई ◆ उतई और मचांदुर शासकीय महाविद्यालय में संयुक्त रूप से कौमी एकता सप्ताह मनाया गया। इसके तहत विद्यार्थियों को दीपावली, स्वीप दीपोत्सव, ईद मिलाद उन्नबी, जेठोनी, कार्तिक पुन्नी एवं गुरुनानक जयंती त्योहारों की खुशियों पर मुंह मीठा कराया गया। प्राचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने अनेकता में एकता, हमारी विशेषता, विषय पर केन्द्रित भाषण, निबंध लेखन, नारालेखन एवं गायन के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया। कॉलेज की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिषद् के साथ ही रासेयो एवं एनसीसी के स्टाफएवं कैडेट्स ने भी कौमी एकता, भाईचारे एवं सद्भावना का हाथ थामे रखने की शपथ ली। अनेकता में एकता पर केन्द्रित व्याख्यान भी हुआ। डॉ. शर्मा ने भारत के स्वर्णिम सांस्कृतिक इतिहास से प्रमाण देते हुए, देश की साझी विरासत के प्रेरक उदाहरण भी दिए। उन्होंने अथर्ववेद से उदाहरण देकर बताया कि हमारी धरती माता विविध भाषा भाषियों और धर्मावलम्बियों का घर है। कामधेनु की तरह हम सबकी भारत भूमि ने धन-धान्य की हजारों धाराएं बहाकर इसे सोने की चिड़िया बनाया है। कार्यक्रम का समन्वय एवं संचालन प्रो. राकेश मिंज ने एव आभार ज्ञापन डॉ. पंकज सोनी ने किया।

बताई हर धर्म की अच्छाइयां

डॉ.शर्मा ने कहा कि तथ्य तो ये है कि वेदज्ञ पण्डितों और महान शायरों ने कौमी एकता का स्वर्णिम शिलान्यास पहले ही कर दिया। मौके पर साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद् के संयोजक डॉ. सियाराम शर्मा ने प्रस्तावना रखते हुए सभी धर्मों की अच्छाइयां बताईं। प्रो. अब्दुल अलीम खान ने देश की साझी विरासत की सराहना की। डॉ. पंकज सोनी, प्रो. खिलेश चन्द्राकर, पूजा परगनिहा एवं प्रो. प्रमोद चौरे ने भी इस कार्यक्रम में सहयोग दिया। छात्रा रवीना टंडन, शारदा एवं मीनाक्षी पटेल विद्यार्थियों ने भी अपने भाषण में कौमी एकता को रेखांकित कर वाहवाही लूटी।

पत्रिका भिलाई, सोमवार, 26 नवंबर, 2018

(81)

महेश चंद्र शर्मा, उतई और मचान्दुर कॉलेज ने संयुक्त रूप से मनाया कौमी एकता सप्ताह

पहले ही हो चुका था कौमी एकता का स्वर्णिम शिलान्यास

■ हमारे प्रतिनिधि | उतई.

शासन के निर्देशानुसार शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई एवं दाऊ उत्तम साव शासकीय महाविद्यालय मचान्दुर द्वारा संयुक्त रूप से कौमी एकता सप्ताह का आयोजन किया गया. उक्त अवधि में दीपावलीए, स्वीप दीपोत्सव, ईद.ए.मिलाद.उल नबी, जेठोनी, कार्तिक पुन्नी एवं गुरुनानक जयंती आदि कौमी एकता पर्व त्यौहार भी हुए, विद्यार्थियों का मुंह मीठा कराया गया.

प्राचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा के मार्गदर्शन में अनेकता में एकता, हमारी विशेषता विषय पर केन्द्रित भाषण, निबन्ध लेखन, नारालेखन एवं गायन आदि हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित किया गया. कॉलेज की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिषद् के साथ ही रासेयो एवं एनसीसी के स्टाफ एवं कैडेट्स ने भी कौमी एकता, भाईचारे एवं सद्भावना पर केन्द्रित इस आयोजन के प्रति छात्र-छात्राओं को जोड़ने का प्रयास किया. अनेकता में एकता पर केन्द्रित व्याख्यान माला का भी आयोजन किया गया. प्राचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए इस कार्यक्रम को युवावर्ग के साथ सभी के लिए उपयोगी बताया. डॉ. शर्मा ने भारत के स्वर्णिम सांस्कृतिक इतिहास से अनेक प्रमाण देते हुए देश की साझी विरासत के प्रेरक उदाहरण भी दिये. उन्होंने अथर्ववेद से उदाहरण देते हुये बताया कि हमारी धरती माता विविध भाषा भाषियों और धर्मावलम्बियों का घर है.

उतई महाविद्यालय में कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अतिथिगण

कामधेनु की तरह हम सबकी भारत भूमि ने धन-धान्य की हजारों धारायें बहाकर इसे सोने की चिड़िया बनाया है. विश्वगुरु भारत के वाल्मीकि तुलसी और विश्व के महानायक राजारामचन्द्र ने इसी जन्मभूमि को स्वर्ग से महान बताया और कहा कि स्वतन्त्रता सेनानियों ने ली है. इनसे प्रेरणा ज्योतिषाचार्य एवं नीति शास्त्री महाकवि रहीम, श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त रसखान, मीर तकी मीर और नजीर अकबराबादी के दोहों, गीतों और नज्मों ने मिलकर कौमी एकता का पैगाम इस देश को बहुत पूर्व में ही दे दिया था. तथ्य तो ये है कि वेदज्ञ पण्डितों और महान शायरों ने कौमी एकता का स्वर्णिम शिलान्यास पहले ही कर दिया. मौके पर साहित्यिक, सांस्कृतिक परिषद् के संयोजक डॉ. सियाराम शर्मा ने प्रस्तावना रखते हुये सभी धर्मों की अच्छाईओं का उल्लेख किया. प्रो. अब्दुल अलीम खान ने देश की साझी विरासत की सराहना की.

डॉ. पंकज सोनी, प्रो. खिलेश चन्द्राकार, सुश्री पूजा परगनिहा व प्रो. प्रमोद चौरे सहित अन्य शिक्षकों ने भी विद्यार्थियों की सराहनीय मार्गदर्शन दिया. रवीना टण्डन, शारदा एवं मीनाक्षी पटेल आदि विद्यार्थियों ने भी अपने भाषण में कौमी एकता को रेखांकित कर वाहवाही लूटी. कार्यक्रम का संचालन प्रो. राकेश मिंज ने व आभार प्रदर्शन डॉ. पंकज सोनी ने किया.

नवभारत 2

सोमवार 26 नवम्बर 2018

PRINCIPAL
Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Scanned by TapScanner